Volume : 6 | Issue : 2 | February - 2017 ISSN - 2250-1991 | IF : 5.215 | IC Value : 79.96

Original Research Paper Hindi

प्रेमचन्द के कथालेखन में आदर्श और यथार्थ का समन्वय

डॉ. अवधेश जैन | शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

KEYWORDS

संसार के सभी लिखित–अलिखित साहित्य में कहानी सबसे प्राचीनतम विधा है। कहानी पढ़ने या सुनने की प्रवृत्ति केवल बच्चों में ही नहीं, वयस्कों में भी होती है। आज के व्यस्त जीवन में कहानी की लोक–प्रियता का कारण है उसका छोटा होना। कहानी का शाब्दिक अर्थ है, कहना। जो कुछ भी कहा जाए सामान्य अर्थ में कहानी है, किन्तु विशिष्ट अर्थ में किसी रोचक घटना का वर्णन कहानी है। कहानी गद्य में रचित, मनोरंजक या कौतूहलवर्द्धक होने के साथ अंत में किसी चमत्कारपूर्ण घटना की योजना के लक्षण से पूर्ण होती है।

मुंशी प्रेमचन्द ने कहानी के विषय में कहा है, कि कहानी एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथाविन्यास सब उसी एक भाव की पुष्टि करते हैं। वह एक ऐसा गमला है, जिसमें एक पौधे का मार्धुय अपने समुन्नत रूप से दृष्टिगोचर होता है। ''प्रेमचन्द जी ने कहानी को जीवन का अंग माना और कहा कि सबसे उत्तम कहानी वह होती है। जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हों।''[1]

प्रेमचन्द का उपन्यास–साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के साथ ही कहानी में अद्वितीय स्थान रहा है। सन् 1907 में 'जमाना' पत्रिका में प्रेमचन्द की पहली उर्दू कहानी 'संसार का अनमोल रतन' एवं पहला उर्दू संग्रह नवाबराय के नाम से 'सोजे वतन' 1908 में छपा, यह देश भक्ति की भावना से ओत प्रेत होने के कारण भविष्य में न लिखने की चेतावनी के साथ अंग्रेजों ने प्रत्तियों को जलवा दिया। जमाना के संपादक मुंशी दयानारायण निगम की सलाह पर अब नवाबराय से न लिखकर प्रेमचन्द के नाम से लिखना आरम्भ किया। और 1916 में पंचपरमेश्वर नामक हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। सौत 1915, बलिदान 1918, आत्माराम 1920, बूढी काकी 1921, विचित्र होली 1921, गृहदाह 1922, हार की जीत 1922, परीक्षा 1923, आपबीती 1923, उद्धार, सवा सेर गेहूँ 1924, शतरंज के खिलाड़ी, माता का हृदय 1925, कजाकी 1926, सुजानभगत 1927, इस्तीफा 1928, अलग्योझा 1929, पूस की रात 1930, तावान, होली का उपहार 1931, ठाकुर का कुआ 1932, बेटोवाली विधवा 1932, ईदगाह 1933, नशा, बड़े भाई साहब 1934, तथा कफन 1936 में आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई। साथ ही 1918 में सप्तसरोज, नवनिधि, 1919–20 में प्रेम पचीसी, 1924 में प्रेम–प्रसून 1929 में प्रेम चतुर्थी तथा प्रेम प्रतिज्ञा कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। ''1936 कफन जैसी श्रेष्ठ कहानी और गोदान सरीखा कालजयी उपन्यास लिखकर मानो उस साहित्य महारथी ने अपनी महायात्रा का पूर्वामास कराया इसी वर्ष गोदान प्रकाशित कराया'' ।[2]

कथालेखन की पृष्ठभूमिः–

यथार्थ और आदर्श का संगम, सरल और बोलचाल की भाषा ने कहानियों को जीवन के समीप ला खड़ा किया है। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी जो मानसरोवर के आठ खण्डों में प्रकाशित है। ''प्रेमचन्द की कहानियां अपने आसपास की जिन्दगी से जुड़ी हुई हैं। वे ग्रामीण जीवन से अधिक सम्बद्ध थे, अतः उनकी अधिकतर कहानियों का विषय गाँव की जिन्दगी से निःसृत है। पर उनकी बहुतेरी कहानियां कस्बाई जिन्दगी, सत्याग्रह–आन्दोलन, स्कूल और कॉलेज के वातावरण तथा जमींदारों, साहूकारों, क्लर्कों एवं उच्च पदाधिकारियों की समस्याओं और परिवेश की उपज हैं।''[3] विभिन्न विषयों पर प्रेमचन्द ने अपना लेखन कार्य किया कहानियों के पात्रों के संबंध में उनका मानना था कि ''अब हम कहानी का मूल्य उसके घटना–विन्यास से नहीं लगाते। हम चाहते हैं, पात्रों की मनोगति स्वयं घटनाओं की सृष्टि करें।''[4] प्रेमचन्द के कथालेखन में निम्नलिखित बातों का समावेश मिलता हैः–

1. कहानियों का चित्रपट विशाल है। विभिन्न पात्रों जैसे कर्जदार–महाजन, नौकर–मालिक, हिन्दू–मुस्लमान आदि से यथार्थ चित्रण कहानियों में मिलता है।

2. गाँवों के जीवन का यथार्थ सजीव चित्रण प्रेमचन्द की कहानियों में मिलता है। जैसे पूस की रात, सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुआँ आदि कहानियां।

3. सत्य, न्याय, त्याग, स्नेह सौन्दर्य जैसे आदर्श कहानियों में शामिल है।

4. मानववादी दृष्टिकोण कहानियों में सुरक्षित है प्रेमचन्द मानते हैं कि बुरा आदमी भी बिलकुल बुरा नहीं होता, उसमें कही न कही देवता अवश्य छिपा होता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है, उस देवता को खोलकर दिखा देना कहानी का काम है जैसे बड़े घरा की बेटी, पंचपरमेश्वर इसके उदाहरण है।

5. प्रेमचन्द ने मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन सुन्दर कहानी का तत्व माना है। सुजान भगत, मुक्तिमार्ग, पंचपरमेश्वर, शतरंज के खिलाड़ी आदि में मनोवैज्ञानिक रहस्य को खोलने की चेष्टा की गई है।

6. नारी जीवन के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण प्रेमचन्द के कथालेखन में मिलता है।

7. लोक जीवन के साथ ही राजनैतिक परिवेश को कहानियों में स्थान दिया गया है।

8. यथार्थवादी विचार धारा से लेखन काफी प्रभावित है और इसका चित्रण लेखक ने अपनी लेखनी के माध्यम से कथालेखन में किया है।

हिन्दी साहित्य और लोक जीवन के चर्चित कहानीकार प्रेमचन्द ने पाठक के लिए अपने कथालेखन के माध्यम से एक स्पष्ट विचारधारा प्रदान की है। इनके कहानी साहित्य में लेखन के विविध आयाम देखने को मिलते हैं। प्रेमचन्द के कथालेखन की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर ही कहानियों का विषयगत विवेचन और मूल भाव को समझा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथः

1. प्रेमचन्द : कुछ विचार, 1973, पृ. सं. 53
2. कृष्ण कुमार राय : बीसवी सदी के सर्वश्रेष्ठ कथाकार प्रेमचन्द, प्रकाशक प्राच्य लमही, वाराणसी, पृ. सं. 81
3. डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, दिल्ली 2007, पृ. सं. 581
4. द साइकॉलोजी ऑफ सोसाइटी : मारिस जिन्सवर्ग, पृ. 166